

पुंपूर्वता स्त्री. (तत्.) वन. पुष्प में नारी-अंग से पहले, नर अंग (पुमंग) के परिपक्व हो जाने की अवस्था/स्थिति।

पुंगफल पुं. (तत्.) सुपारी।

पुंगरा पुं. (तद्.) कम उम्र (5 से 10 वर्ष) का बालक, पौंगंड।

पुंगव पुं. (तत्.) सांड, वृषभ वि. किसी वर्ग या समुदाय विशेष में सर्वश्रेष्ठ जैसे- नर पुंगव अवध नरेश।

पुंगीफल पुं. (तत्.) सुपारी।

पुंज पुं. (तत्.) राशि, ढेर, समूह।

पुंजशः क्रि.वि. (तत्.) एक-एक पुंज करके।

पुंजातीय वि. (तत्.) पुंलिंग।

पुंजित वि. (तत्.) ढेर लगाया हुआ, एक स्थान पर इकट्ठा किया हुआ।

पुंजीभूत वि. (तत्.) ढेर का रूप लिया हुआ।

पुंड पुं. (तत्.) तिलक, टीका।

पुंडरी पुं. (तत्.) 1. एक पौधा जिसके पत्ते शालपर्णी के पत्ते के समान होते हैं 2. पुंडरिया नामक पौधा।

पुंडरीक पुं. (तत्.) 1. श्वेत कमल, कमल 2. अग्निकोण का दिग्गज 3. बाघ 4. दोना 5. एक द्रव्यौषध 6. ईख का एक भेद 7. आम का एक प्रकार 8. बड़ा 9. कमंडलु 10. हाथी का ज्वर 11. श्वेत छत्र 12. एक कोषकार।

पुंडरीकाक्ष पुं.वि. (तत्.) 1. जिसकी आँखें कमल के समान हों 2. विष्णु।

पुंडरीयक पुं. (तत्.) 1. पुंडरिया 2. स्थलकमल 3. एक औषध।

पुंडर्य पुं. (तत्.) एक विशेष पौधा जो नेत्र रोग में दवा के काम आता है।

पुंड्र पुं. (तत्.) 1. एक दैत्य 2. एक प्राचीन देश 3. तिलक, टीका 4. पाकड़।

पुंड्रक पुं. (तत्.) 1. ईख का एक भेद 2. रेशम के कीड़े पालने का काम करने वाला 3. माधवी लता 4. तिलक वृक्ष।

पुंरत्न पुं. (तत्.) 1. श्रेष्ठ पुरुष, 11 पुरुषों में रत्न के समान श्रेष्ठ पुरुष।

पुंराशि स्त्री. (तत्.) नर राशि जैसे- मकर और कुंभ दोनों राशियाँ पुंराशियाँ हैं।

पुंलिंग पुं. (तत्.) व्या. 1. पुरुषवाचक या नरवाचक शब्द 2. पुरुष/नर का चिह्न, शिश्न।

पुंवत् वि. (तत्.) नर/पुरुष के जैसा।

पुंवतरोमता स्त्री. (तत्.) अत्यधिक रोम होना (स्त्रियों में), पुरुषों के समान रोम होना।

पुंश्चली स्त्री. (तत्.) कुलटा, वेश्या।

पुंसत्व पुं. (तद्.) 1. पुरुषत्व 2. वीर्य, शुक्र।

पुंसवन पुं. (तत्.) सोलह संस्कारों में से दूसरा संस्कार जो गर्भाधान के तीसरे माह में होता है।

पुंस्त्व/पुंसत्व पुं. (तत्.) 1. पुरुषत्व 2. वीर्य, शुक्र।

पुआ पुं. (तत्.) एक मीठा पकवान जो गेहूँ के आटे या मैदे आदि के घोल में दूध, चीनी और मेवे आदि डालकर घी में पकाया जाता है।

पुकार स्त्री. (देश.) किसी व्यक्ति को अपनी ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए उसका नाम लेकर जोर-जोर से बुलाने या संबोधित करने की क्रिया 2. किसी से सहायतार्थ उसे आवाज देकर अपनी ओर बुलाना मुहा. पुकार मचाना- सहायता या न्याय प्राप्त करने के लिए लोगों को बुलाना; पुकार सुनना- किसी की प्रार्थना या अनुरोध पर ध्यान देना।

पुख पुं. (तद्.) नक्षत्र।

पुखराज पुं. (तद्.) एक मूल्यवान रत्न।

पुखी वि. (तद्.) बलिष्ठ, ताकतवर, बलवान, शक्तिशाली, तगड़ा।

पुखतगी स्त्री. (फा.) 1. दृढ़ता, मजबूती 2. पुष्टि जैसे- अदालत में बयान की पुख्तगी की गई 3. टिकाऊपन।

पुखता वि. (फा.) 1. स्थिर, टिकाऊ जैसे- सरकारी भवन पुख्ता बने हुए हैं 2. दृढ़, मजबूत जैसे- माँ ने बेटे को सीमा पर भेजते समय अपना